इतिहास अध्यापन के शैक्षणिक साधन व उपयोग

श्री. राकेश अशोक रामराजे

सहाय्यक प्राध्यापक,

पी.व्ही.डी.टी. कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन फॉर वूमेन,

चर्चगेट, मुंबई – 20.

प्रस्तावना –

शिक्षण क्रिया को सरल, सजीव एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि नवीन ज्ञान, भाव एवं विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए जाए कि उनका स्वरुप प्रत्यक्ष, स्पष्ट एवं मूर्त हो उठे। इस कारण शैक्षणिक उपकरणों की आवश्यकता पडती है। इन उपकरणों की सहायता से अमूर्त, जटील एवं सूक्ष्म बातों को मूर्त, सरल एवं स्वरुपगत बनाया जा सकता है और बालकों को उनका प्रत्यक्ष अध्ययन कराया जा सकता है। इनके प्रयोगों से पाठोंको क्रियात्मक एवं व्यावहारिक बनाने में सहायता मिलती है।

शैक्षणिक उपकरणों के अनेक रुप हो सकते है –

1. विषय सामग्री को सुव्यवस्थित रुप से उपस्थित करने वाली पाठयपुस्तकें।
2. कक्षा शिक्षण का अनिवार्य साध श्यामपटट्।
3. विषय सामग्री को स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष करने के लिए उदाहरण। उदाहरण के भी दो रुप है।
   - अ. मौखिक अथवा शब्दिक
   - ब. दृश्य–श्राव्य उदाहरण

श्यामपटट् और फेल्ट बोर्ड

श्यामपटट् का प्रयोग शिक्षण का अभिन्न अंग है। भाषा ही नहीं, बल्कि कोई भी विषय श्यामपटट् का प्रयोग किए बिना भली–भॉति नहीं पढाया जा सकता। इतिहास के पाठों में नये शब्द, परिभाषा, उदाहरण आदि बताते समय श्यामपटट् पर उनका उल्लेख आवश्यक हो जाता है। इससे पाठ अधिक स्पष्ट और बोधगम्य हो जाता है। श्यामपटट् पर उल्लिखित सामग्री को बालक अपनी रचना एवं अभ्यास पुस्तिका में लिख लेते है। बिना श्यामपटट् के कक्षा अधूरी है। कक्षा की व्यवस्था एवं साज–सज्जा में श्यामपटट् की व्यवस्था अवश्य रहनी चाहिए।

श्यामपटट् की आवश्यकता एवं उपयोगिता

शिक्षक द्वारा प्रस्तुत मौखिक शिक्षण से बालक की श्रवणेंन्द्रिय ही सक्रिय रहती है, पर मौखिक शिक्षण के साथ श्यामपटट् के यथोचित प्रयोग से बालक की नेत्रेंन्द्रिय भी सक्रिय हो जाती है जिससे बालक का ज्ञान सुदृढ और स्थायी होता है। श्रवण एवं निरीक्षण दोंनों के योग से अवधान में एकाग्रता और प्रगाढता आ जाती है। श्यामपटट् पर पाठ के महत्वपूर्ण अंशो, तथ्यों, परिभाशा,

आकृतियॉ आदि के उल्लेख से छात्रों का ध्यान अपने आप उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है और उनका मानसिक बिम्ब बन जाता है।

पाठ के कठिन स्थलों को चित्र, रेखाचित्र, आकृतियॉ आदि द्वारा अथा उदाहरण, परिभाषा आदि के उल्लेख द्वारा सरल एवं सुबोधपूर्ण बनाया जा सकता है। पाठ सारांश एवं पुनरावृत्ती के उल्लेख की दृष्टी से श्यामपटट् एक अपरिहार्य साधन है। श्यामपटट् सहज ही सुलभ शैक्षणिक उपकरण है और स्वल्प व्ययसाध्य भी।

फेल्ट बोर्ड

यह एक प्रकार का बोर्ड या तख्ता होता है जिस पर खुरदरा एवं रंगीन कपडा लगा देते है। इस बोर्ड पर शिक्षक गत्ते अथवा अन्य प्रकार की बनाई हुई आकृतियॉ, चित्र चिपका सकते है। इसका सबसे बडा लाभ यह है कि शिक्षक चित्र आदि शीघ्रता से चिपका या हटा सकता है। इस बोर्ड का प्रयोग इतिहास में बहुत होता है और यह इसकी उपयोगिता का प्रमाण है।

उदाहरण

अ. शाब्दिक अथवा मौखिक उदाहरण

शाब्दिक उदाहरण के अंतर्गत वे शब्द–चित्र आते है जिनका प्रयोग किसी कठिन भाव या विचार को सरल बनाने और समझाने के लिए किया जाता है। हमारे भाव एवं विचार अमूर्त तत्व है। शाब्दिक उदाहरणों के प्रयोग से बालकों का ध्यान पाठ की ओर बना रहता है। पाठ रुचिकर, सुबोधपूर्ण एवं सुग्राहय बन जाता है। प्रेरणाप्रद कहाणी, प्रसिद्ध कथन सुनकर बालक अवश्य ही उत्प्रेरित एवं अनुप्राणित होते है। शाब्दिक उदाहरण देते समय उपयुक्त अवसर एवं प्रसंग आने पर ही उदाहरण दिए जायॅ। अप्रासंगिक अथवा मूल विषय को हटा लेने वाले उदाहरण नहीं देना चाहिए।

ब. दृश्य एवं श्रव्य उदाहरण

ज्ञान एवं अनुभव के लिए चक्षु एवं श्रवण प्रमुख ज्ञानेंन्द्रियॉ है। शिक्षण के समय नई बात सिखाना या नवीन अनुभव कराने के लिए ऐसे उदाहरणों की आवश्यकता पडती है। जो बालकों की दृष्टि एवं श्रवण शक्ति को सक्रिय बना सकें। इसी कारण महान शिक्षाशास्त्रियों रुसो प्रेस्टालाजी आदि ने वस्तुओं के साक्षात एवं प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर पढाने की प्रणाली का प्रतिपादन किया। इसमे कोई संदेह नहीं की बालक मौखिक कथ की अपेक्षा क्रिया तथा प्रत्यक्ष वस्तु की ओर अधिक आकृष्ट होते है, उपकरणों के प्रयोग से पाठ क्रियात्मक हो उठता है, कक्षा का वातावरण सजीव और आकर्षक हो जाता है, और मनोरंजक एवं सुखद परिसितियों में बालकों के लिए सीखना सरल हो जाता हैं।

दृश्य–श्रव्य उदाहरणों के प्रकार

1. **दृश्य साधन –** वास्तविक पदार्थ, प्रतिमूर्ति या नमूने, चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र, चार्ट पोस्टर, टाईम लाईन प्रोजेक्टर, एपिडायस्कोप आदि।

2. श्रव्य साधन – रेडियो, ग्रामोफोन, टेप–रेकार्डर आदि।

3. दृश्य–श्रव्य साधन – चलचित्र, दूरदर्शन, आदि।

दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग

कक्षा की स्थिती, प्रसंग एवं अवसर के अनुसार दृश्य–श्रव्य साधनों का चयन और प्रयोग होना चाहिए। अनावश्यक व अधिक सामग्री प्रयोग से कक्षा में अजायबघर जैसी स्थिती हो जाती है। अतः पाठ की दृष्टि से उपयुक्त सामग्री का ही चयन वांछित है। सामग्री व्यय साध्य न हो। सुगमतापूर्वक सुलभ हो। घटना एवं क्रियाप्रधान चित्र या अन्य दृश्य सामग्री अधिक उपयोगी होती है। अनेक भावों एवं तथ्यों वाले चित्रों का चयन नहीं होना चाहिए।

पदार्थ एवं वस्तुएँ – वास्तविक वस्तु के प्रदर्शन से बालक को स्वयं प्रत्यक्ष अनुभव होता है। बालकों की कल्पना को यथार्थ और साकार बनाने के लिए पदार्थो अथवा वस्तुओं का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। जो वस्तुएँ विद्यालय के संग्रहालय में सुरक्षित रखी जा सकती है, उन्हे एकत्र किया जाय और शिक्षण के समय उनका यथाप्रसंग प्रयोग किया जायें।

प्रतिमूर्ति या नमूने –पदार्थो अथवा वस्तुओं के अभाव मे उनके नमूने उपयोगी सिद्ध होते है। वैज्ञानिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विषयों से संबंन्धित भाशा के पाठों में नमूनों का प्रयोग आवश्यक होता है। जैसे अशोक के स्तंभ, स्तूप, ताजमहल आदि।

चित्र – चित्रों के प्रयोग से पाठ में रोचकता और स्पश्टता आती है। चित्रों का लाभ यह है कि वे सरलता से मिल जाते है। सुरक्षित रखे जा सकते है और छात्रों को उपयोगी चित्रों के संकलन में आनंद भी आता है। ऐतिहासिक चित्र– किले, भवन, युद्ध, सिक्के आदि।

रेखाचित्र – रेखाचित्र ऐसा शैक्षणिक उपकरण है जो सदा ही शिक्षक के हाथ में है। किसी भी उपकरण के अभाव में शिक्षक खडिया द्वारा श्यामपटट् पर रेखाचित्र बना सकता है। पर इसके लिए शिक्षक को चित्रकला का थोडा अभ्यास करना पडता है।

मानचित्र – ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पाठों में मानचित्रों का प्रयोग उपयोगी होता है। मानचित्र द्वारा विश्व या देश में कौनसी सत्ताओंने अपना साम्राज्य विस्तारित किया इनका ज्ञान अधिक होता है।

चार्ट, पोस्टर – अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में इन्हें अधिक महत्व है। इनके द्वारा कल्पनाओंका सजीवता प्राप्त होता है।

श्रव्य साधन

प्रोजेक्टर – इस यंत्र दवारा चित्रो के बने हुए स्लाइडस कक्षा के सम्मुख दिखाए जाते है। विविध दृश्य, स्थान, क्रियाएँ आदि के स्लाइडस बने होते है और वे बडे आकार में इस यंत्र की सहायता से विद्यार्थी मार्गदर्शन कर सकते है।

एपिडायस्कोप – इस यंत्र द्वारा चित्र, मानचित्र, आकृतियॉ बडे रुप में छात्रों को दिखाए जाते है। इस यंत्र को स्लाइडकी आवश्यकता नहीं पडती। मूल चित्र को ही दिखाया जाता है।

रेडिओ – रेडिओ द्वारा शिक्षण के काय्र में यथेष्ट सहायता ली जा सकती है। अब रेडिओ का प्रचार बहुत हो गया है। अधिकतर विद्यालयों के पास यह साधन उपलब्ध है। रेडिओ द्वारा भाषण, वार्तालाप, रुपक आदि की शैली से बालक परिचित होते है। कक्षामें पाठों को सुनने और उन पर परिचर्चा करने का आयोजन होत रहना चाहिए।

ग्रामोफोन – शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी रेकार्ड बालकों को सुनाने क लिए उपयोगी है।

टेप–रेकार्डर – रेकार्ड किया हुयी बातें अध्यापन में विद्यार्थीओं को सुनाने के लिए यह उपयुक्त साधन है। उदा. नेताजी सुभाशचंद्र बोस इनका भाषण।

दृश्य–श्रव्य साधन

चलचित्र – चलचित्र द्वारा होने वाला अध्यापन अधिकतम समय के लिए याद में रहता है। उसमें चित्र के साथ साथ कथन भी रहता है। पुरानी घटना हो या नयी उसमें आवाज के साथ चित्र की अनुभूती होणे के कारण मनोरंजक तरिके से अध्ययन होताता है।

दूरदर्शन – शिक्षण विषय कार्यक्रमांको अध्यापन के स्वरुप में स्वीकार करते हुए अध्यापन किया जाता है। दूरदर्शन यह एक ऐसा माध्यम है जिसके अनुसार ग्रामीण या शहरी भागों में अध्ययन एक साथ, एक ही समय किया जाता है।

संदर्भसूची :

1. शिंदे, डी. व टोपकर, आर. (2009), इतिहासाचे आशययुक्त अध्यापन. पुणे : नित्यनूतन प्रकाशन.
2. ओडेयर, एस्. (1994), इतिहास आशययुक्त अध्यापन पद्धती. पुणे : मेहता पब्लिशिंग हाऊस.
3. तिवारी, सी. म. (2001), इतिहास अध्यापन पद्धती. पुणे : नूतन प्रकाशन.
4. वाजे, एस्. आर व बरकले, आर. (2001), इतिहासाच्या अध्यापन शास्त्रीय विश्लेषण. नाशिक : आदित्य प्रकाशन.
5. य. च. म. मु. विद्यापीठ, (2004), आशययुक्त अध्यापन पद्धती. नाशिक : य. च. म. मु. विद्यापीठ.